

DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST
TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR
PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-1 ,UNIT-7,EMOTION JAMES-
LONGE THEORY

LECTURE-14

EMOTION (संवेग)

जेम्स _लांजे सिद्धांत

JAMES-LONGE THEORY

जेम्स-लांजे सिद्धांत दो वैज्ञानिकों विलियम जेम्स जो अमेरिकन मनोवैज्ञानिक थे तथा कार्ल लांजे जो डेनिस शरीर क्रिया वैज्ञानिक (DANISH PHYSIOLOGIST) थे द्वारा स्वतंत्र रूप से 1880 में किया गया |चूँकि इन दोनों वैज्ञानिकों का विचार संवेग के बारे में एक दुसरे से मिलते-जुलते थे ,अतः इस सिद्धांत का नाम दोनों के नाम पर रखा गया जो जेम्स-लांजे सिद्धांत के रूप में मशहूर है |इस सिद्धांत द्वारा संवेग की व्याख्या सामान्य बोध की व्याख्या से ठीक विपरीत है |सामान्यतः जब हम कोई साम्बेगिक उद्दीपक जैसे शेर या बाघ देखते

है तो डर जाते हैं , इसलिए हम भागते हैं |इसका मतलब यह हुआ की पहले संवेगात्मक अनुभूति होती है अर्थात हमें डर लगता है उसके बाद संवेगात्मक व्यवहार होता है अर्थात हम भागने का काम करते हैं |किन्तु जेम्स-लांजे सिद्धांत द्वारा ऐसा नहीं होता है |इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति बाघ या भालू को देखकर भाग जाता है इसलिए डर जाता है |हम दुश्मन को देखकर मुंह फेर लेते हैं इसलिए उससे घृणा करते हैं इन उदाहरणों से स्पष्ट है की जेम्स-लांजे सिद्धांत के अनुसार पहले संवेगात्मक व्यवहार होता है और तब संवेगात्मक अनुभूति होती है |यदि संवेगात्मक व्यवहार नहीं होता तो संवेगात्मक अनुभूति भी नहीं होती |दुसरे शब्दों में ,यदि व्यक्ति बाघ या भालू को देखकर नहीं भागता तो उसमे डर की अनुभूति भी नहीं होती है |

उपर्युक्त व्याख्या से यह स्पष्ट है की जेम्स-लांजे सिद्धांत संवेग की व्याख्या निम्नांकित तीन चरणों में करता है :-

(i)सबसे पहले व्यक्ति किसी उद्दीपक जो संवेग उत्पन्न कर सकता है ,उसका प्रत्यक्षण करता है |दुसरे शब्दों में ,संवेग की प्रक्रिया प्रत्यक्षण पर निर्भर करती है |

(ii)किसी उद्दीपक (शेर या बाघ) का प्रत्यक्षण होने से शरीर के तीसरी अंगो एवं बाह्य अंगो में परिवर्तन हो जाता है जिसके फलस्वरूप व्यक्ति संवेगात्मक व्यवहार करता है |

(iii) संवेगात्मक व्यवहार के बाद मस्तिष्क को यह सूचना मिलती है की अमुक व्यवहार किया गया है |शरीर के भीतरी अंगो से तथा शरीर के

बाहरी अंगो से |मस्तिष्क को अमुक साम्वेगिक व्यवहार से सम्बंधित परिवर्तनों की सुचना मिलती है |इस तरह की व्याख्या से दो बाते स्पष्ट हो जाती है -

पहला तो यह की संवेगात्मक व्यवहार पहले होता है तथा संवेगात्मक अनुभूति बाद में |दूसरा यह है की संवेगात्मक अनुभूति का होना संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर करता है | यदि संवेगात्मक व्यवहार नहीं होगा तो संवेगात्मक अनुभूति भी नहीं होगा |बाघ या भालू को देखकर हम भाग जाते है (संवेगात्मक व्यवहार होता है) और भागने की यह सुचना मस्तिष्क को मिलती है जिसके फलस्वरूप हममें संवेगात्मक अनुभूति होती है अर्थात हम डर जाते है |जेम्स-लांजे सिद्धांत का समर्थन कुछ वैसे अध्ययन द्वारा किया गया है जो आनन पुनर्निवेशन प्राक्कल्पना के क्षेत्र में लायर्ड 1984 तथा मैटसुमोटो (1987)द्वारा किये गये है यह प्राक्कल्पना बतलाता है की आनन् अभिव्यक्ति संवेगात्मक अवस्थाओ को प्रभावित करता है तथा साथ ही साथ उन्हें प्रतिबिंबित भी करता है कई मनोवैज्ञानिकों ने जिसमे मैककेन एवं एंडरसन (1987)एवं एकमेंन , डेविडसन एवं फ्रिसेन (1990)ने अपने अध्ययनों से जेम्स -लांजे सिद्धांत को काफी समर्थन दिया है |मनोवैज्ञानिको ने जेम्स -लांजे सिद्धांत की व्याख्या के साथ -साथ उसकी आलोचना भी की है |जो इस प्रकार है :-

(i) इस सिद्धांत के अनुसार संवेगात्मक अनुभूति , संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर करती है , परन्तु सच्चाई ऐसी नहीं है करीब -करीब सभी संवेग में तो एक ही तरह के संवेगात्मक व्यवहार जैसे HEART की गति में वृद्धी

रक्त चाप में ,वृद्धी, सांस की गति में वृद्धी एवं इसकी अनियमितता आदि देखने को मिलती है |यदि सचमुच में संवेगात्मक अनुभूति संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर करती तो वैसी परिस्थिति में व्यक्ति को हमेशा एक ही संवेगात्मक अनुभूति होती क्योंकि करीब -करीब एक ही तरह का संवेगात्मक व्यवहार विशेष कर आंतरिक शारीरिक परिवर्तन सभी संवेग में हुआ करते है परन्तु ऐसा नहीं होता है |कभी हमें क्रोध का संवेग होता है ,तो कभी डर का ,तो कभी डाह का| उसका मतलब यह हुआ की संवेगात्मक अनुभूति , संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर नहीं रहती है |

(ii)इस सिद्धांत के अनुसार संवेगात्मक अनुभूति शारीरिक परिवर्तनो पर निर्भर करती है |यदि संवेगात्मक अनुभूति सचमुच में शारीरिक परिवर्तनो पर निर्भर करती है तो जब जब शारीरिक परिवर्तन व्यक्ति में उत्पन्न होता तब तब उसमे संवेग की अनुभूति होती है |परन्तु प्रयोगात्मक अध्ययन से यह साबित हो गया है की ऐसा नहीं होता है |

(iii)प्रयोगात्मक अध्ययनों से यह स्पष्ट हो गया है की शरीर के भीतरी अंग अधिक संवेदनशील नहीं होते है क्योंकि इनमे तंत्रिका की संख्या कम होती है तथा ये चिकनी पेशियों से बने होते है इसका परिणाम यह होता है की उसमे आंतरिक परिवर्तन होने में कुछ समय लगता है सच्चाई यह की व्यक्ति को संवेगात्मक अनुभव इन अंगो में परिवर्तन होने के कुछ पहले हो जाता है इसका तब स्पष्ट मतलब यह हुआ की संवेगात्मक अनुभव पहले हो जाते है तथा संवेगात्मक परिवर्तन बाद में होता है |ऐसी परिस्थिति में जेम्स-लांजे का यह विचार की संवेगात्मक

अनुभूति संवेगात्मक परिवर्तन द्वारा ही उत्पन्न होती है ,सही नहीं दीख पड़ता है ।

(iv)जेम्स-लांजे सिद्धांत के अनुसार यदि शारीरिक परिवर्तन या इसकी सुचना मस्तिष्क को ना मिले तो संवेगात्मक अनुभूति नहीं होगी यानी व्यक्ति में किसी प्रकार का संवेग नहीं होगा ।परन्तु ,शेरिंगटन ने कुत्ता पर एक प्रयोग कर यह दिखला दिया है की यह बात गलत है ।

निष्कर्ष के रूप में यह कहा जाता है की शारीरिक परिवर्तन या साम्बेगिक व्यवहार पर ही संवेगात्मक अनुभूति निर्भर नहीं रहती है ।अतः जेम्स-लांजे का सिद्धांत मात्र एक-पक्षिय प्राक्कल्पना है जिसका कोई खास प्रयोगात्मक सबूत नहीं है ।